चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक 7.11.2020 पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....2-7.....

शोध

एचएयू के वैज्ञानिकों ने धान की पराली प्रबंधन के लिए इन-सीटू तकनीक से निकाला हल, फसल विविधीकरण अपना सकेंगे किसान

इन-सीटू : धान वाले खेत में आलू की बिजाई कर सकेंगे किसान

हिसार (ब्यूर)। धान की फसल वाले खेत में आलू की बिजाई करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला है। इसके प्रयोग से अब पराली को बिना जलाए व खेत के अंदर ही उपयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी।

इस पराली प्रबंधन तकनीक को हाल ही में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) की वार्षिक कार्यशाला में स्वीकृति मिल चुकी है। यह कार्यशाला केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. मनोज कुमार की अध्यक्षता में शिमला में हुई थी। इस तकनीक को उन क्षेत्रों के लिए सिफारिश किया गया है, जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं।

इन वैज्ञानिकों ने किया अनुसंधान : पराली प्रबंधन की इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक पर कृषि महाविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. अरुण कुमार भाटिया के नेतृत्व में डॉ. विजय पाल पंघाल, डॉ. लीला बोरा व क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) से डॉ. धर्मबीर यादव के सहयोग से अनुसंधान किया गया। इस तकनीक के लिए लगातार दो वर्ष तक उचानी में ट्रायल लगाए गए और उसके बाद सकारात्मक परिणाम आने के बाद किसानों के लिए सिफारिश की गई।

इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से खेत तैयार करते हुए। (फाइल फोटो) अमर उजाला

किसानों को यह आ रही थी मुख्य समस्या : अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि पराली की कटाई की समस्या व फसल अवशेषों के पारंपरिक उपयोग की कमी के कारण आज किसान समस्याओं का सामना कर रहा। अक्तूबर माह में ही धान की कटाई होती है और इसी माह में आलू की बिजाई की जाती है। इसी के चलते ऐसी तकनीक विकसित करना जरूरी था, जिससे किसानों को इस समस्या से निजात मिल सके। पराली प्रबंधन की इस इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक को अपनाकर किसान एक ओर जहां फसल विविधीकरण को अपना सकेंगे तो दूसरी ओर भूमि की उर्वरा शक्ति भी कायम रहेगी। फसल अवशेष जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ भूमि व जनजीवन के स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ते हैं। ऐसे में किसान आलू लगाकर फसल चक्र अपनाते हुए भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखेंगे और जमीन भी अगली फसल की बिजाई तक खाली नहीं रखनी पड़ेगी।

ऐसे कर सकते हैं किसान इस तकनीक का उपयोग : डॉ. विजय पाल पंघाल ने बताया कि धान की फसल की कटाई के बाद और आलू बोने से पहले धान की फसल के अवशेषों को अच्छी तरह से ट्रैक्टर चालित पैडी स्ट्रा चॉपर एवं सह स्प्रेडर के साथ खेत में फैला देना चाहिए। फिर 50 किलोग्राम यूरिया प्रति हेक्टेयर के हिसाब से छिड़काव के बाद 500 लीटर प्रति हेक्टेयर डीकंपोजर और 500 लीटर प्रति हेक्टेयर गोबर घोल का छिड़काव करें। इसके बाद डिस्क हैरो और रोटावेटर की सहायता से जुताई करते हुए पूरे खेत में मिला देना चाहिए। साथ ही विश्वविद्यालय की समग्र सिफारिशों का उपयोग करते हुए आलू की बिजाई करनी चाहिए।

पराली प्रबंधन की समस्या से मिल सकेगी निजात : प्रो. सिंह

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह अवशेष प्रबंधन तकनीक उन क्षेत्रों के किसानों के लिए अधिक कारगर साबित हो सकती है, जहां किसान धान की फसल के तुरंत बाद आलू की बिजाई करते हैं। इससे फसल चक्र को भी मदद मिलेगी और भूमि की उर्वरा शक्ति भी कायम रहेगी। साथ ही पर्यावरण प्रदूषण से भी निजात मिलेगी। उन्होंने वैज्ञानिकों को इसके लिए बधाई दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक जागरण.....

दिनांक 7.11.2020.....पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....2-8.....

अब किसान धान वाले खेत में कर सकेंगे आलू की बिजाई

जागरण संवादाता, हिसार : धान की फसल वाले खेत में आलू की बिजाई करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला है। इसके प्रयोग से अब पराली को बिना जलाए व खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी।

इस पराली प्रबंधन तकनीक को हाल ही में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) की वार्षिक वर्कशॉप में स्वीकृति मिल चुकी है। यह वर्कशॉप केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डा. मनोज कुमार की अध्यक्षता में शिमला में आयोजित हुई थी। इस तकनीक को इस्तेमाल करने के लिए उन क्षेत्रों में सिफारिश की गई है, जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं।

इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से खेत को कर रहे तैयार। • फाइल फोटो

इन विज्ञानियों ने किया अनुसंधान

पराली प्रबंधन की इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक पर कृषि महाविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. अरुण कुमार भाटिया के नेतृत्व में डा. विजय पाल पंघाल, डा. लीला बोरा व क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) से डा. धर्मबीर यादव के सहयोग से अनुसंधान किया गया। इस तकनीक के लिए लगातार दो वर्ष तक उचानी में ट्रायल लगाए गए। सकारात्मक परिणाम आने के बाद इसकी सिफारिश की गई।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के विज्ञानियों ने धान की पराली प्रबंधन के लिए इन-सीटू तकनीक से निकाला हल

किसानों को ये आ रही थी मुख्य समस्या

अनुसंधान निदेशक डा. एसके सहरावत ने बताया कि पराली की कटाई की समस्या व फसल अवशेषों के पारंपरिक उपयोग की कमी के कारण आज किसान समस्याओं का सामना कर रहा है। अक्टूबर माह में ही धान की कटाई होती है और इसी दौरान आलू की बिजाई की जाती है। ऐसे में किसान धान के खेत को तुरंत खाली कर उसमें आलू की खेती करते हैं। इसी के चलते ऐसी तकनीक विकसित करना जरूरी था जिससे किसानों को समस्या से निजात मिल सके।

इस तकनीक से बनी रहेगी भूमि की उर्वरा शक्ति

पराली प्रबंधन की इस इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक को अपनाकर किसान एक ओर जहां फसल विविधिकरण को अपना सकेंगे, वहीं दूसरी ओर भूमि की उर्वरा शक्ति भी कायम रहेगी। फसल अवशेष जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ भूमि व जन-जीवन के स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ते हैं। ऐसे में किसान आलू लगाकर फसल चक्र अपनाते हुए भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखेंगे और जमीन भी अगली फसल की बिजाई तक खाली नहीं रखनी पड़ेगी।

ऐसे कर सकते का प्रयोग

डा. विजय पाल पंघाल ने बताया कि धान की फसल की कटाई के बाद और आलू बोने से पहले धान की फसल के अवशेषों को अच्छी तरह से पैडी स्ट्रा चॉपर एवं सह स्प्रेडर के साथ खेत में फैला देना चाहिए। फिर 50 किग्रा यूरिया प्रति हेक्टेयर के छिड़काव के बाद 500 लीटर प्रति हेक्टेयर डी कंपोजर और 500 लीटर प्रति हेक्टेयर गोबर घोल का छिड़काव करें। फिर डिस्क हैरो और रोटावेटर की सहायता से जुताई करते हुए पूरे खेत में मिला देना चाहिए।

पराली प्रबंधन की समस्या से मिल सकेगी निजात

एचएयू के कुलपति प्रो. समर सिंह ने बताया कि यह अवशेष प्रबंधन तकनीक उन क्षेत्रों के लिए अधिक कारगर साबित हो सकती है, जहां किसान धान की फसल के तुरंत बाद आलू की बिजाई करते हैं। इससे भूमि की उर्वरा शक्ति भी कायम रहेगी। साथ ही पर्यावरण प्रदूषण से भी निजात मिलेगी। विवि के विज्ञानियों का पराली प्रबंधन को लेकर यह प्रयास काफी सराहनीय है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 7.11.2020 पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....3-8.....

इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से किसान अब धान वाले खेत में कर सकेंगे आलू की बिजाई

■ एच.ए.यू. वैज्ञानिकों ने धान की पराली प्रबंधन के लिए इन-सीटू तकनीक से निकाला हल

हिसार, 6 नवम्बर (ब्यूरो): धान की फसल वाले खेत में आलू की बिजाई करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला है, जिसके प्रयोग से अब पराली को बिना जलाए व खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी। इस पराली प्रबंधन तकनीक को हाल ही में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) की वार्षिक वर्कशॉप में स्वीकृति मिल चुकी है। यह वर्कशॉप केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. मनोज कुमार की अध्यक्षता में शिमला में आयोजित हुई थी। इस तकनीक को उन क्षेत्रों के लिए सिफारिश किया गया है जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं।

पराली प्रबंधन की इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक पर कृषि महाविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. अरूण कुमार भाटिया के नेतृत्व में डॉ. विजय पाल पंघाल, डॉ. लीला बोरा व क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) से डॉ. धर्मबीर यादव के सहयोग से अनुसंधान किया गया। इस तकनीक के लिए लगातार दो वर्ष तक उचानी में ट्रायल लगाए गए और उसके बाद सकारात्मक परिणाम आने के बाद किसानों के लिए सिफारिश किया गया।

इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से खेत को तैयार करते का फाइल फोटो।

बॉक्स: किसानों को ये आ रही थी मुख्य समस्या अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि पराली की कटाई की समस्या व फसल अवशेषों के पारंपरिक उपयोग की कमी के कारण आज किसान समस्याओं का सामना कर रहा। उन्होंने बताया कि अक्तुबर माह में ही धान की कटाई होती है और इसी माह में आलू की बिजाई की जाती है।

ऐसे में धान के खेत को तुरंत खाली कर किसान उसमें आलू की खेती करते हैं, जिसके लिए उन्हें खेत को खाली करना पड़ता है। इसी के चलते ऐसी तकनीक विकसित करना जरूरी था जिससेकिसानों को इस समस्या से निजात मिल सके।

बॉक्स: ऐसे कर सकते हैं किसान इस तकनीक का प्रयोगडॉ. विजय पाल पंघाल ने बताया कि धान की फसल की कटाई के बाद और आलू बोने से पहले धान की फसल के अवशेषों को अच्छी तरह से ट्रैक्टर चालित पैडी स्ट्रा चॉपर एवं सह स्प्रेडर के साथ खेत में फैला देना चाहिए। फिर 50 किलोग्राम यूरिया प्रति हेक्टेयर के छिड़काव के बाद 500 लीटर प्रति हेक्टेयर डीकंपोजर और 500 लीटर प्रति हेक्टेयर गोबर घोल का छिड़काव करें। इसके बाद डिस्क हैरो और रोटावेटर की सहायता से जुताई करते हुए पूरे खेत में मिला देना चाहिए। साथ ही विश्वविद्यालय की समग्र सिफारिशों का प्रयोग करते हुए आलू की बिजाई करनी चाहिए और अन्य आवश्यक पैकेजों का पालन करना चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....हरि. भूमि.....

दिनांक ..7..11..2020....पृष्ठ संख्या.....9.....कॉलम.....1-5.....

उपलब्धि

धान की पराली प्रबंधन के लिए इन-सीटू तकनीक से निकाला हल

इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से किसान धान वाले खेत में कर सकेंगे आलू की बिजाई

किसान आलू लगाकर फसल चक्र अपनाते हुए भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखेंगे

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

धान की फसल वाले खेत में आलू की बिजाई करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला है, जिसके प्रयोग से अब पराली को बिना जलाए व खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी। इस पराली प्रबंधन तकनीक को हाल ही में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) की वार्षिक वर्कशॉप में स्वीकृति मिल चुकी है। यह वर्कशॉप केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. मनोज कुमार की अध्यक्षता में शिमला में आयोजित हुई थी। इस तकनीक को उन क्षेत्रों के लिए सिफारिश किया गया है जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं।

डॉ. अरूण भाटिया · डॉ. विजय पाल पंघाल · डॉ. लीला बोरा · डॉ. धर्मबीर यादव

हिसार। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की टीम का फाइल फोटो।

यह आ रही थी समस्या

अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि पराली की कटाई की समस्या व फसल अवशेषों के पारंपरिक उपयोग की कमी के कारण आज किसान समस्याओं का सामना कर रहा। उन्होंने बताया कि अक्तूबर माह में ही धान की कटाई होती है और इसी माह में आलू की बिजाई की जाती है। ऐसे में धान के खेत को तुरंत खाली कर किसान उसमें आलू की खेती करते हैं, जिसके लिए उन्हें खेत को खाली करना पड़ता है। इसी के चलते ऐसी तकनीक विकसित करना जरूरी था जिससे किसानों को इस समस्या से निजात मिल सके। इस इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक को अपनाकर किसान एक ओर जहां फसल विविधिकरण को अपना सकेंगे तो दूसरी ओर भूमि की उर्वरा शक्ति भी कायम रहेगी। ऐसे में किसान आलू लगाकर फसल चक्र अपनाते हुए भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखेंगे और जमीन भी अगली फसल की बिजाई तक खाली नहीं रखनी पड़ेगी।

इन वैज्ञानिकों ने किया अनुसंधान

पराली प्रबंधन की इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक पर कृषि महाविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. अरूण कुमार भाटिया के नेतृत्व में डॉ. विजय पाल पंघाल, डॉ. लीला बोरा व क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी(करनाल) से डॉ. धर्मबीर यादव के सहयोग से अनुसंधान किया गया। इस तकनीक के लिए लगातार दो वर्ष तक उचानी में ट्रायल लगाए गए और उसके बाद सकारात्मक परिणाम आने के बाद किसानों के लिए सिफारिश किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक भास्कर.....

दिनांक 7.11.2020 पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....3.....

अवशेष प्रबंधन तकनीक से धान वाले खेत में कर सकेंगे आलू की बिजाई

भास्कर न्यूज़ | हिसार

धान की फसल वाले खेत में आलू की बिजाई करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला है, जिसके प्रयोग से अब पराली को बिना जलाए व खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी। इस पराली प्रबंधन तकनीक को हाल ही में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) की वार्षिक वर्कशॉप में स्वीकृति मिल चुकी है।

यह वर्कशॉप केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. मनोज कुमार की अध्यक्षता में शिमला में आयोजित हुई थी। इस तकनीक को उन क्षेत्रों के लिए सिफारिश किया गया है जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं।

इन वैज्ञानिकों ने किया अनुसंधान, सकारात्मक परिणाम 3आने पर किसानों के लिए की सिफारिश

पराली प्रबंधन की इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक पर कृषि महाविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. अरूण कुमार भाटिया के नेतृत्व में डॉ. विजय पाल पंघाल, डॉ. लीला बोरा व क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी(करनाल) से डॉ. धर्मबीर यादव के सहयोग से अनुसंधान किया गया। इस तकनीक के लिए लगातार दो वर्ष तक उचानी में ट्रायल लगाए गए और उसके बाद सकारात्मक परिणाम आने के बाद किसानों के लिए सिफारिश किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	**07.11.2020**	——	--

इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से किसान अब धान वाले खेत में कर सकेंगे आलू की बिजाई

एचएयू वैज्ञानिकों ने धान की पराली प्रबंधन के लिए इन-सीटू तकनीक से निकाला हल

ट्रुई न्यूज़ | हिसार

धान की फसल वाले खेत में आलू की बिजाई करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला है, जिसके प्रयोग से अब पराली को बिना जलाए व खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी।

इस पराली प्रबंधन तकनीक को हाल ही में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) की वार्षिक वर्कशॉप में स्वीकृति मिल चुकी है। यह वर्कशॉप केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. मनोज कुमार की अध्यक्षता में शिमला में आयोजित हुई थी। इस तकनीक को उन क्षेत्रों के लिए सिफारिश किया गया है जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं। पराली प्रबंधन की इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक पर कृषि महाविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. अरूण कुमार भाटिया के नेतृत्व में डॉ. विजय पाल पंघाल, डॉ. लीला बोरा व क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी(करनाल) से डॉ. धर्मबीर यादव के सहयोग से अनुसंधान किया गया। इस तकनीक के लिए लगातार दो वर्ष तक उचानी में ट्रायल लगाए गए और उसके बाद सकारात्मक परिणाम आने के बाद किसानों के लिए सिफारिश किया गया। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि पराली की कटाई की समस्या व फसल अवशेषों के पारंपरिक उपयोग की कमी के कारण आज किसान समस्याओं का सामना कर रहा। उन्होंने बताया कि अक्तूबर माह में ही धान की कटाई होती है और इसी माह में आलू की बिजाई की जाती है। ऐसे में धान के खेत को तुरंत खाली कर किसान उसमें आलू की खेती करते हैं, जिसके लिए उन्हें खेत को खाली करना पड़ता है। इसी के चलते ऐसी तकनीक विकसित करना जरूरी था जिससेकिसानों को इस समस्या से निजात मिल सके।

डॉ. अरूण भाटिया डॉ. विजय पाल पंघाल डॉ. लीला बोरा डॉ. धर्मबीर यादव

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की टीम का फाइल फोटो व इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से खेत को तैयार करते।

बनी रहेगी भूमि की उर्वरा शक्ति

पराली प्रबंधन की इस इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक को अपनाकर किसान एक ओर जहां फसल विविधिकरण को अपना सकेंगे तो दूसरी ओर भूमि की उर्वरा शक्ति भी कायम रहेगी। फसल अवशेष जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ भूमि व जन-जीवन के स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ते हैं। ऐसे में किसान आलू लगाकर फसल चक्र अपनाते हुए भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखेंगे और जमीन भी अगली फसल की बिजाई तक खाली नहीं रखनी पड़ेगी।

ऐसे कर सकते हैं किसान इस तकनीक का प्रयोग

डॉ. विजय पाल पंघाल ने बताया कि धान की फसल की कटाई के बाद और आलू बोने से पहले धान की फसल के अवशेषों को अच्छी तरह से टैरवटर चालित पैडी स्ट्रा चॉपर एवं सह स्प्रेडर के साथ खेत में फैला देना चाहिए। फिर 50 किलोग्राम यूरिया प्रति हेक्टेयर के छिड़काव के बाद 500 लीटर प्रति हेक्टेयर डीकंपोजर और 500 लीटर प्रति हेक्टेयर जोबर घोल का छिड़काव करें। इसके बाद डिस्क हैरो और टेरावेटर की सहायता से जुताई करते हुए पूरे खेत में मिक्स देना चाहिए। साथ ही विश्वविद्यालय की समय सिफारिशों का प्रयोग करते हुए आलू की बिजाई करनी चाहिए और अन्य आवश्यक पैकेजों का पालन करना चाहिए।

पराली प्रबंधन की समस्या से मिल सकेगी निजात : प्रोफेसर समर सिंह

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह अवशेष प्रबंधन तकनीक उन क्षेत्रों के किसानों के लिए अधिक कारगर साबित हो सकती है जहां किसान धान की फसल के तुरंत बाद आलू की बिजाई करते हैं। इससे फसल चक्र को भी मदद मिलेगी और भूमि की उर्वरा शक्ति भी कायम रहेगी। साथ ही पर्यावरण प्रदूषण से भी निजात मिलेगी। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों का पराली प्रबंधन को लेकर यह प्रयास काफी सराहनीय है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा इस प्रकार के अनुसंधान करने के लिए उनको बधाई दी है।

Go to Settings to activate W

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	**07.11.2020**	——	--

इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से किसान अब धान वाले खेत में कर सकेंगे आलू की बिजाई

हिसार : धान की फसल वाले खेत में आलू की बिजाई करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला है, जिसके प्रयोग से अब पराली को बिना जलाए व खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी। इस पराली प्रबंधन तकनीक को हाल ही में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) की वार्षिक वर्कशॉप में स्वीकृति मिल चुकी है। यह वर्कशॉप केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. मनोज कुमार की अध्यक्षता में शिमला में आयोजित हुई थी। इस तकनीक को उन क्षेत्रों के लिए सिफारिश किया गया है जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं। पराली प्रबंधन की इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक पर कृषि महाविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. अरूण कुमार भाटिया के नेतृत्व में डॉ. विजय पाल पंघाल, डॉ. लीला बोरा व क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी(करनाल) से डॉ. धर्मबीर यादव के सहयोग से अनुसंधान किया गया। इस तकनीक के लिए लगातार दो वर्ष तक उचानी में ट्रायल लगाए गए और उसके बाद सकारात्मक परिणाम आने के बाद किसानों के लिए सिफारिश किया गया। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि पराली की कटाई की समस्या व फसल अवशेषों के पारंपरिक उपयोग की कमी के कारण आज किसान समस्याओं का सामना कर रहा।

एचएयू वैज्ञानिकों ने धान की पराली प्रबंधन के लिए इन-सीटू तकनीक से निकाला हल

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	**07.11.2020**	——	--

किसान अब धान वाले खेत में कर सकेंगे आलू की बिजाई

इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से खेत को तैयार करते का वास्तव फोटो।

● एचएयू वैज्ञानिकों ने धान की पराली प्रबंधन के लिए इन-सीटू तकनीक से निकाला हल

हिसार, 6 नवंबर (गुरुदेव मेहंदी) : धान की फसल वाले खेत में आलू की बिजाई करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला है, जिसके प्रयोग से अब पराली को बिना जलाए व खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी। इस पराली प्रबंधन तकनीक को हाल ही में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) की वार्षिक कार्यशाला में स्वीकृति मिल चुकी है। यह कार्यशाला केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. मनोज कुमार की अध्यक्षता में शिमला में आयोजित हुई थी। इस तकनीक को उन क्षेत्रों के लिए सिफारिश किया गया है जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं।

इन वैज्ञानिकों ने किया अनुसंधान

पराली प्रबंधन की इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक पर कृषि महाविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. अमरीश कुमार भारिया के नेतृत्व में डॉ. विनोद पाल पंघाल, डॉ. लीला बोरा व केंद्रीय अनुसंधान संस्थान उत्तरी (करनाल) से डॉ. धर्मवीर यादव के सहयोग से अनुसंधान किया गया। इस तकनीक के लिए लगातार दो वर्ष तक उपायों में तुलना लगाए गए और उसके बाद सकारात्मक परिणाम आने के बाद किसानों के लिए सिफारिश किया गया।

किसानों को ये आ रही थी मुख्य समस्या

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि पराली की कटाई की समस्या व फसल अवशेषों के पारंपरिक तरीके की कमी के कारण आज किसान समस्याओं का सामना कर रहा। उन्होंने बताया कि सामान्य तौर में धान की कटाई होती है और इसी तरह में आलू की बिजाई की जाती है। ऐसे में धान के खेत को पूरा खाली कर किसान उसमें आलू की खेती करते हैं, जिसके लिए उन्हें खेत को खाली करना पड़ता है। इसी के चलते ऐसी तकनीक विकसित करना जरूरी था जिससे किसानों को इस समस्या से निजात मिल सके।

पराली प्रबंधन की समस्या से मिलेगी निजात : कुलपति

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बलवीर सिंह का कहना है कि यह अवशेष प्रबंधन तकनीक उन क्षेत्रों के किसानों के लिए अधिक कारगर साबित हो सकती है जहां किसान धान की फसल के तुरंत बाद आलू की बिजाई करते हैं। इससे फसल पक्ष को भी मदद मिलेगी और भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढ़ाने रहेगी। धान से पर्यावरण प्रदूषण से भी निजात मिलेगी। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों का पराली प्रबंधन को लेकर यह प्रयास काफी सराहनीय है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा इस प्रकार के अनुसंधान करने के लिए उनको बधाई दी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा वाटिका	**07.11.2020**	——	--

इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से किसान अब धान वाले खेत में कर सकेंगे आलू की बिजाई

एचएयू वैज्ञानिकों ने धान की पराली प्रबंधन के लिए इन-सीटू तकनीक से निकाला हल

वाटिका@हिसार। धान की फसल वाले खेत में आलू की बिजाई करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला है, जिसके प्रयोग से अब पराली को बिना जलाए व खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी। इस पराली प्रबंधन तकनीक को हाल ही में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) की वार्षिक वर्कशॉप में स्वीकृति मिल चुकी है। यह वर्कशॉप केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. मनोज कुमार की अध्यक्षता में शिमला में आयोजित हुई थी। इस तकनीक को उन क्षेत्रों के लिए सिफारिश किया गया है जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं। इन वैज्ञानिकों ने किया अनुसंधान, सकारात्मक परिणाम आने पर किसानों के लिए की सिफारिश पराली प्रबंधन की इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक पर कृषि महाविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. अरूण कुमार भाटिया के नेतृत्व में डॉ. विजय पाल पंघाल, डॉ. लीला बोरा व क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी(करनाल) से डॉ. धर्मबीर यादव के सहयोग से अनुसंधान किया गया। इस तकनीक के लिए लगातार दो वर्ष तक उचानी में ट्रायल लगाए गए और उसके बाद सकारात्मक परिणाम आने के बाद किसानों के लिए सिफारिश किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समर घोष	**06.11.2020**	——	--

पराली जलाने से मिलेगा अब छुटकारा

इन सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक बनेगी संजीवनी

किसान अब धान वाले खेत में कर सकेंगे आलू की बिजाई

सिरसा (निस)। पिछले लंबे समय से हर साल दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश व राजस्थान आदि में रहने वाली एक बड़ी आबादी के लिए विष बन चुकी पराली जलाने से उपजने वाली प्रदूषण की समस्या से अब जल्द छुटकारा मिलेगा क्योंकि इसके लिए हरियाणा की चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला है जो निश्चित ही निकट भविष्य में पूरी मानव जाति के लिए संजीवनी का काम करेगी। इस तकनीक के प्रयोग से अब पराली को बिना जलाए व खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी। इस पराली प्रबंधन तकनीक को हाल ही में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) की वार्षिक वर्कशॉप में स्वीकृति मिल चुकी है। यह वर्कशॉप केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. मनोज कुमार की अध्यक्षता में शिमला में आयोजित हुई थी। इस तकनीक को उन क्षेत्रों के लिए सिफारिश किया गया है जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं। पराली प्रबंधन की इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक पर कृषि महाविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. अरूण कुमार भाटिया के नेतृत्व में डॉ. विजय पाल पंघाल, डॉ. लीला बोरा व क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) से डॉ. धर्मबीर यादव के सहयोग से अनुसंधान किया गया। इस तकनीक के लिए लगातार दो वर्ष तक उचानी में ट्रायल लगाए गए और उसके बाद सकारात्मक परिणाम आने के बाद किसानों के लिए सिफारिश किया गया।

फसलचक्र से भी मिलेगा लाभः-

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत के मुताबिक पराली की कटाई की समस्या व फसल अवशेषों के पारंपरिक उपयोग की कमी के कारण आज किसान समस्याओं का सामना कर रहा है। उन्होंने बताया कि अक्तूबर माह में ही धान की कटाई होती है और इसी माह में आलू की बिजाई की जाती है। ऐसे में धान के खेत को तुरंत खाली शेष पेज 2 पर...

इस सिलसिले में क्षेत्र के कुछ किसानों ने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से बेशक फसल अवशेष जलाने के गंभीर मुद्दे का आलू बिजाई के साथ हल तलाशा गया है मगर धरातल पर यह तब तक व्यवहारिक नहीं है जब तक सरकार आलू की फसल पर भी एमएसपी घोषित न कर दे क्योंकि किसानों का अपना अनुभव है कि पिछले कुछ सालों के दौरान आलू की बिजाई करने पर इतना अधिक उत्पादन हो गया था कि बाजार की तमाम आवश्यकताएं पूरी करने के बाद भी आलू काफी मात्रा में किसानों के पास बच गया था और उस समय सरकारों ने भी किसानों की मदद से अपने हाथ खींच लिए थे। ऐसे में किसानों को अपने आलू सड़कों पर फेंकने पड़े थे। किसानों के मुताबिक यदि सरकार हर हाल में आलू खरीदने की गारंटी दे तो इस विकल्प पर विचार किया जा सकता है।

पराली प्रबंधन की समस्या से मिलेगी निजातः प्रोफेसर समर सिंह

वहीं हकृवि के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि यह अवशेष प्रबंधन तकनीक उन क्षेत्रों के किसानों के लिए अधिक कारगर साबित हो सकती है जहां किसान धान की फसल के तुरंत बाद आलू की बिजाई करते हैं। इससे फसल चक्र को भी मदद मिलेगी और भूमि की उर्वरा शक्ति भी कायम रहेगी। साथ ही पर्यावरण प्रदूषण से भी निजात मिलेगी। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों का पराली प्रबंधन को लेकर यह प्रयास काफी सराहनीय है और निश्चित ही इस तकनीक से किसान और आमजन लाभान्वित होंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	**06.11.2020**	——	--

इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से किसान अब धान वाले खेत में कर सकेंगे आलू की बिजाई

एचएयू वैज्ञानिकों ने धान की पराली प्रबंधन के लिए इन-सीटू तकनीक से निकाला हल

डॉ. अरूण भाटिया डॉ. विजय पाल पंचाल डॉ. लीला बोरा डॉ. धर्मबीर यादव

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 6 नवम्बर : धान की फसल वाले खेत में आलू की बिजाई करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला है, जिसके प्रयोग से अब पराली को बिना जलाए व खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी। इस पराली प्रबंधन तकनीक को हाल ही में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) की वार्षिक वर्कशॉप में स्वीकृति मिल चुकी है। यह वर्कशॉप केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. मनोज कुमार की अध्यक्षता में शिमला में आयोजित हुई थी। इस तकनीक को उन क्षेत्रों के लिए सिफारिश किया गया है जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं।

इन वैज्ञानिकों ने किया अनुसंधान, सकारात्मक परिणाम आने पर किसानों के लिए की सिफारिश

पराली प्रबंधन की इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक पर कृषि महाविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. अरूण कुमार भाटिया के नेतृत्व में डॉ. विजय पाल पंचाल, डॉ. लीला बोरा व क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी(करनाल) से डॉ. धर्मबीर यादव के सहयोग से अनुसंधान किया गया। इस तकनीक के लिए लगातार दो वर्ष तक उचानी में ट्रायल लगाए गए और उसके बाद सकारात्मक परिणाम आने के बाद किसानों के लिए सिफारिश किया गया।

किसानों को ये आ रही थी मुख्य समस्या

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि पराली की कटाई की समस्या व फसल अवशेषों के पारंपरिक उपयोग की कमी के कारण आज किसान समस्याओं का सामना कर रहा। उन्होंने बताया कि अक्तूबर माह में ही धान की कटाई होती है और इसी माह में आलू की बिजाई की जाती है। ऐसे में धान के खेत को तुरंत खाली कर किसान उसमें आलू की खेती करते हैं, जिसके लिए उन्हें खेत को खाली करना पड़ता है। इसी के चलते ऐसी तकनीक विकसित करना जरूरी था जिससे किसानों को इस समस्या से निजात मिल सके।

बनी रहेगी भूमि की उर्वरा शक्ति

पराली प्रबंधन की इस इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक को अपनाकर किसान एक ओर जहां फसल विविधिकरण को अपना सकेंगे तो दूसरी ओर भूमि की उर्वरा शक्ति भी कायम रहेगी। फसल अवशेष जलाने से पर्यावरण प्रदुषण के साथ-साथ भूमि व जन-जीवन के स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ते हैं। ऐसे में किसान आलू लगाकर फसल चक्र अपनाते हुए भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखेंगे और जमीन भी अगली फसल की बिजाई तक खाली नहीं रखनी पड़ेगी।

ऐसे कर सकते हैं किसान इस तकनीक का प्रयोग

डॉ. विजय पाल पंचाल ने बताया कि धान की फसल की कटाई के बाद और आलू बोने से पहले धान की फसल के अवशेषों को अच्छी तरह से ट्रैक्टर चालित पैडी स्ट्रा चॉपर एवं सह स्प्रेडर के साथ खेत में फैला देना चाहिए। फिर 50 किलोग्राम यूरिया प्रति हेक्टेयर के छिड़काव के बाद 500 लीटर प्रति हेक्टेयर डीकंपोजर और 500 लीटर प्रति हेक्टेयर गोबर घोल का छिड़काव करें। इसके बाद डिस्क हैरो और रोटावेटर की सहायता से जुताई करते हुए पूरे खेत में मिला देना चाहिए। साथ ही विश्वविद्यालय की समग्र सिफारिशों का प्रयोग करते हुए आलू की बिजाई करनी चाहिए और अन्य आवश्यक पैकेजों का पालन करना चाहिए।

पराली प्रबंधन की समस्या से मिल सकेगी निजात : प्रोफेसर समर सिंह

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह अवशेष प्रबंधन तकनीक उन क्षेत्रों के किसानों के लिए अधिक कारगर साबित हो सकती है जहां किसान धान की फसल के तुरंत बाद आलू की बिजाई करते हैं। इससे फसल चक्र को भी मदद मिलेगी और भूमि की उर्वरा शक्ति भी कायम रहेगी। साथ ही पर्यावरण प्रदूषण से भी निजात मिलेगी। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों का पराली प्रबंधन को लेकर यह प्रयास काफी सराहनीय है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा इस प्रकार के अनुसंधान करने के लिए उनको बधाई दी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**06.11.2020**	——	--

एचएयू वैज्ञानिकों ने धान की पराली प्रबंधन के लिए इन-सीटू तकनीक से निकाला हल

इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से किसान अब धान वाले खेत में कर सकेंगे आलू की बिजाई

पांच बजे न्यूज

हिसार। धान की फसल वाले खेत में आलू की बिजाई करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला है, जिसके प्रयोग से अब पराली को बिना जलाए व खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी। इस पराली प्रबंधन तकनीक को हाल ही में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) की वार्षिक वर्कशॉप में स्वीकृति मिल चुकी है। यह वर्कशॉप केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. मनोज कुमार की अध्यक्षता में शिमला में आयोजित हुई थी। इस तकनीक को उन क्षेत्रों के लिए सिफारिश किया गया है जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं।

इन वैज्ञानिकों ने किया अनुसंधान, सकारात्मक परिणाम आने पर किसानों के लिए की सिफारिश

पराली प्रबंधन की इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक पर कृषि महाविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. अरूण कुमार भाटिया के नेतृत्व में डॉ. विजय पाल पंघाल, डॉ. लीला बोरा व क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी(करनाल) से डॉ. धर्मबीर यादव के सहयोग से अनुसंधान किया गया। इस तकनीक के लिए लगातार दो वर्ष तक उचानी में ट्रायल लगाए गए और उसके बाद सकारात्मक परिणाम आने के बाद किसानों के लिए सिफारिश किया गया।

किसानों को ये आ रही थी मुख्य समस्या

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि पराली की कटाई की समस्या व फसल अवशेषों के पारंपरिक उपयोग की कमी के कारण आज किसान समस्याओं का सामना कर रहा। उन्होंने बताया कि अक्तूबर माह में ही धान की कटाई होती है और इसी माह में आलू की

बिजाई की जाती है। ऐसे में धान के खेत को तुरंत खाली कर किसान उसमें आलू की खेती करते हैं, जिसके लिए उन्हें खेत को खाली करना पड़ता है। इसी के चलते ऐसी तकनीक विकसित करना जरूरी था जिससे किसानों को इस समस्या से निजात मिल सके।

बनी रहेगी भूमि की उर्वरा शक्ति

पराली प्रबंधन की इस इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक को अपनाकर किसान एक ओर जहां फसल विविधिकरण को अपना सकेंगे तो दूसरी ओर भूमि की उर्वरा शक्ति भी कायम रहेगी। फसल अवशेष जलाने से पर्यावरण प्रदुषण के साथ-साथ भूमि व जन-जीवन के स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ते हैं। ऐसे में किसान आलू लगाकर फसल चक्र अपनाते हुए भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखेंगे और जमीन भी अगली फसल की बिजाई तक खाली नहीं रखनी पड़ेगी।

ऐसे कर सकते हैं किसान इस तकनीक का प्रयोग

डॉ. विजय पाल पंघाल ने बताया कि धान की फसल की कटाई के बाद और आलू बोने से पहले धान की फसल के अवशेषों को अच्छी तरह से ट्रैक्टर चालित पैडी स्ट्रा चॉपर एवं सह स्प्रेडर के साथ खेत में फैला देना चाहिए। फिर 50 किलोग्राम यूरिया प्रति हेक्टेयर के छिड़काव के बाद 500 लीटर प्रति हेक्टेयर डीकंपोजर और 500 लीटर प्रति हेक्टेयर गोबर घोल का छिड़काव करें। इसके बाद डिस्क हैरो और रोटावेटर की सहायता से जुताई करते हुए पूरे खेत में मिला देना चाहिए। साथ ही विश्वविद्यालय की समग्र सिफारिशों का प्रयोग करते हुए आलू की बिजाई करनी चाहिए और अन्य आवश्यक पैकेजों का पालन करना चाहिए।

पराली प्रबंधन की समस्या से मिल सकेगी निजात : प्रो. समर सिंह

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने बताया कि यह अवशेष प्रबंधन तकनीक उन क्षेत्रों के किसानों के लिए अधिक कारगर साबित हो सकती है जहां किसान धान की फसल के तुरंत बाद आलू की बिजाई करते हैं। इससे फसल चक्र को भी मदद मिलेगी और भूमि की उर्वरा शक्ति भी कायम रहेगी। साथ ही पर्यावरण प्रदुषण से भी निजात मिलेगी। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों का पराली प्रबंधन को लेकर यह प्रयास काफी सराहनीय है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा इस प्रकार के अनुसंधान करने के लिए उनको बधाई दी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**06.11.2020**	——	--

हकृवि वैज्ञानिकों की तकनीक

पराली को बिना जलाए खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी

हिसार/06 नवंबर/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला है, जिसके प्रयोग से अब पराली को बिना जलाए व खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी। इस पराली प्रबंधन तकनीक को हाल ही में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) की वार्षिक वर्कशॉप में स्वीकृति मिल चुकी है। यह वर्कशॉप केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. मनोज कुमार की अध्यक्षता में आयोजित हुई थी। इस तकनीक को उन क्षेत्रों के लिए सिफारिश किया गया है जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं। पराली प्रबंधन की इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक पर कृषि महाविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. अरूण कुमार भाटिया के नेतृत्व में डॉ. विजय पाल पंघाल, डॉ. लीला बोरा व क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) से डॉ. धर्मबीर यादव के सहयोग से अनुसंधान किया गया। इस तकनीक के लिए लगातार दो वर्ष तक उचानी में ट्रायल लगाए गए और उसके बाद सकारात्मक परिणाम आने के बाद इसे किसानों के लिए सिफारिश किया गया। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि पराली की कटाई की समस्या व फसल अवशेषों के पारंपरिक उपयोग की कमी के कारण किसान समस्याओं का सामना कर रहा है। उन्होंने बताया कि अक्टूबर माह में धान की कटाई होती है और इसी माह में आलू की बिजाई की जाती है। ऐसे में किसानों को खेत को खाली करना पड़ता है। इसी के चलते ऐसी तकनीक विकसित करना जरूरी था जिससे किसानों को इस समस्या से निजात मिल सके। पराली प्रबंधन की इस इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक को अपनाकर किसान एक ओर जहां फसल विविधिकरण को अपना सकेंगे वहीं दूसरी ओर भूमि की उर्वरा शक्ति भी कायम रहेगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	**06.11.2020**	——	--

उपलब्धि : एचएयू वैज्ञानिकों ने धान की पराली प्रबंधन के लिए इन-सीटू तकनीक से निकाला हल

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। धान की फसल वाले खेत में आलू की बिजाई करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला है, जिसके प्रयोग से अब पराली को बिना जलाए व खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी। इस पराली प्रबंधन तकनीक को हाल ही में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) की वार्षिक वर्कशॉप में स्वीकृति मिल चुकी है। यह वर्कशॉप केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान,

शिमला के निदेशक डॉ. मनोज कुमार की अध्यक्षता में शिमला में आयोजित हुई थी। इस तकनीक को उन क्षेत्रों के लिए सिफारिश किया गया है जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं।

पराली प्रबंधन की इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक पर कृषि महाविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. अरूण कुमार भाटिया के नेतृत्व में डॉ. विजय पाल पंघाल, डॉ. लीला बोरा व क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी (करनाल) से डॉ. धर्मबीर यादव के सहयोग से अनुसंधान किया गया। इस तकनीक के लिए लगातार दो वर्ष तक उचानी में ट्रायल लगाए गए और उसके बाद सकारात्मक परिणाम आने के बाद किसानों के लिए सिफारिश किया गया।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि पराली की कटाई की समस्या व फसल अवशेषों के पारंपरिक उपयोग की कमी के कारण आज किसान समस्याओं का सामना कर रहा। उन्होंने बताया कि अक्तूबर माह में ही धान की कटाई होती है और इसी माह में आलू की बिजाई की जाती है। ऐसे में धान के खेत को तुरंत खाली कर किसान उसमें आलू की खेती करते हैं, जिसके लिए उन्हें खेत को खाली करना पड़ता है। इसी के चलते ऐसी तकनीक विकसित करना जरूरी था जिससे किसानों को इस समस्या से निजात मिल सके।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 7.11.2020 पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....6-8.....

सोयाबीन व मूंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

हिसार, 6 नवम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'सोयाबीन व मुंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है।

सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसान सोयाबीन व मुंगफली का उत्पादन तो कर लेते हैं लेकिन उनके खाद्य उत्पाद तैयार करने की तकनीकी व सही जानकारी के अभाव में उचित दाम हासिल नहीं कर पाते। इसलिए किसान विश्वविद्यालय से सोयाबीन व मूंगफली के उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण हासिल कर अधिक लाभ कमा सकते हैं। डॉ. सुरेंद्र सिंह ने मूंगफली व सोयाबीन की आहार महत्ता के बारे में जानकारी दी। ज्ञात रहे कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 20 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं।

प्रशिक्षण शिविर के दौरान प्रतिभागियों से ऑनलाइन रूबरू होते वैज्ञानिक।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक जागरण.....

दिनांक ..7.11.2020..पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....1-2.....

मूंगफली और सोयाबीन के उत्पाद तैयार कर कमाएं अधिक मुनाफा

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय सोयाबीन व मूंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डा. आरएस हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है।

प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डा. अशोक गोदारा ने कहा कि किसान सोयाबीन व मूंगफली का उत्पादन तो कर लेते हैं, लेकिन उनके खाद्य उत्पाद तैयार करने की तकनीकी व सही जानकारी के अभाव में उचित दाम हासिल नहीं कर पाते। इसलिए किसान विश्वविद्यालय से सोयाबीन व मूंगफली के उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण हासिल कर अधिक लाभ कमा सकते हैं। डा. सुरेंद्र सिंह ने मूंगफली व सोयाबीन की आहार महत्ता के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि इनके उत्पाद संतुलित आहार का अभिन्न अंग हैं। डा. डीके शर्मा ने दोनों को दैनिक आहार में शामिल करने पर जोर दिया। उन्होंने प्रतिभागियों को घरेलू स्तर सोयाबीन व मूंगफली से दूध व अन्य उत्पाद तैयार करने की विधि बताई।

विभिन्न जिलों के करीब 20 प्रशिक्षणार्थी ले रहे प्रशिक्षण

इस ऑनलाइन प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 20 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मूंगफली व सोयाबीन से विभिन्न उत्पाद तैयार करने की विधियों पर विज्ञानी अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाएंगे और इनसे अधिक लाभ कमाने के बारे में जानकारी देंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक 7.11.2020 पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....4-5.....

मूंगफली व सोयाबीन के उत्पाद तैयार कर कमा सकते हैं अधिक मुनाफा : गोदारा

हिसार। एचएयू के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय सोयाबीन व मूंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद विषय पर शुक्रवार को ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है।

प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसान सोयाबीन व मूंगफली का उत्पादन तो कर लेते हैं, लेकिन उनके खाद्य उत्पाद तैयार करने की तकनीकी व सही जानकारी के अभाव में उचित दाम हासिल नहीं कर पाते। किसान विश्वविद्यालय से सोयाबीन व मूंगफली के उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण हासिल कर अधिक लाभ कमा सकते हैं। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। डॉ. सुरेंद्र सिंह ने कहा कि सोयाबीन व मूंगफली और इनके उत्पाद संतुलित आहार का अभिन्न अंग हैं। ब्यूरो

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक भास्कर.....

दिनांक ..7.11.2020...पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....8.....

मूंगफली व सोयाबीन के उत्पाद से कमा सकते हैं ज्यादा मुनाफा : डॉ. अशोक

हिसार | एचएयू के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'सोयाबीन व मुंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण)डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसान सोयाबीन व मुंगफली का उत्पादन तो कर लेते हैं लेकिन उनके खाद्य उत्पाद तैयार करने की तकनीकी व सही जानकारी के अभाव में उचित दाम हासिल नहीं कर पाते। इसलिए किसान विश्वविद्यालय से सोयाबीन व मुंगफली के उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण हासिल कर अधिक लाभ कमा सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	**07.11.2020**	——	--

'मूंगफली-सोयाबीन के उत्पाद तैयार कर कमाएं अधिक मुनाफा'

- सोयाबीन व मँगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद' विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरु

हिसार (सच कहूँ न्यूज)।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'सोयाबीन व मूंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसान सोयाबीन व मूंगफली का उत्पादन तो कर लेते हैं लेकिन उनके खाद्य उत्पाद तैयार करने की तकनीकी व सही जानकारी के अभाव में उचित दाम हासिल नहीं कर पाते। इसलिए किसान विश्वविद्यालय से सोयाबीन व मूंगफली के उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण हासिल कर अधिक लाभ कमा सकते हैं। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। डॉ. सुरेंद्र सिंह ने मुंगफली व सोयाबीन की आहार महत्ता के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि सोयाबीन व मुंगफली और इनके उत्पाद संतुलित आहार का अभिन्न अंग हैं। डॉ. डी.के. शर्मा ने इन दोनों को अपने दैनिक आहार में शामिल करने पर जोर दिया। उन्होंने प्रतिभागियों को अपने घरेलू स्तर सोयाबीन व मूंगफली से दूध व अन्य उत्पाद तैयार करने की विधि से अवगत कराया। साथ ही प्रतिभागियों को घर पर ही इनके उत्पाद तैयार करने के लिए एक असाइनमेंट भी दिया। उन्होंने कहा कि इनके उत्पाद तैयार करने के लिए घर पर ही मौजूद मिक्सर, ग्राईडर व अन्य सामान का उपयोग किया जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	**07.11.2020**	——	--

मुंगफली व सोयाबीन के उत्पाद तैयार कर कमा सकते हैं अधिक मुनाफा

'सोयाबीन व मुंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद' विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

टूडे न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'सोयाबीन व मुंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण)डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसान सोयाबीन व मुंगफली का उत्पादन तो कर लेते हैं लेकिन उनके खाद्य उत्पाद तैयार करने की तकनीकी व सही जानकारी के अभाव में उचित दाम हासिल नहीं कर पाते। इसलिए किसान विश्वविद्यालय से सोयाबीन व मुंगफली के उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण हासिल कर अधिक लाभ कमा सकते हैं। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। डॉ. सुरेंद्र सिंह ने मुंगफली व सोयाबीन की आहार महत्ता के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि सोयाबीन व मुंगफली और इनके उत्पाद संतुलित आहार का अभिन्न अंग हैं। डॉ. डी.के. शर्मा ने इन दोनों को अपने दैनिक आहार में शामिल करने पर जोर दिया। उन्होंने प्रतिभागियों को अपने घरेलू स्तर सोयाबीन व मुंगफली से दूध व अन्य उत्पाद तैयार करने की विधि से अवगत कराया। साथ ही प्रतिभागियों को घर पर ही इनके उत्पाद तैयार करने के लिए एक असाइनमेंट भी दिया। उन्होंने कहा कि इनके उत्पाद तैयार करने के लिए घर पर ही मौजूद मिक्सर, ग्राइंडर व अन्य सामान का उपयोग किया जा सकता है।

इस ऑनलाइन प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 20 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मुंगफली व सोयाबीन से विभिन्न उत्पाद तैयार करने की विधियों पर वैज्ञानिक अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाएंगे और इनसे अधिक लाभ कमाने के बारे में जानकारी देंगे। प्रशिक्षण में वैज्ञानिक प्रतिभागियों के साथ प्रशिक्षण संबंधी उनके अनुभवों को लेकर विचार-विमर्श भी करेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा वाटिका	**07.11.2020**	——	--

मुंगफली व सोयाबीन के उत्पाद तैयार कर कमा सकते हैं अधिक मुनाफा : डॉ. अशोक गोदारा

सोयाबीन व मुंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

वाटिका@हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय ह्यसोयाबीन व मुंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पादद्ध विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण)डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसान सोयाबीन व मुंगफली का उत्पादन तो कर लेते हैं लेकिन उनके खाद्य उत्पाद तैयार करने की तकनीकी व सही जानकारी के अभाव में उचित दाम हासिल नहीं कर पाते। इसलिए किसान विश्वविद्यालय से सोयाबीन व मुंगफली के उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण हासिल कर अधिक लाभ कमा सकते हैं। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। डॉ. सुरेंद्र सिंह ने मुंगफली व सोयाबीन की आहार महत्ता के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि सोयाबीन व मुंगफली और इनके उत्पाद संतुलित आहार का अभिन्न अंग हैं। डॉ. डी.के. शर्मा ने इन दोनों को अपने दैनिक आहार में शामिल करने पर जोर दिया। उन्होंने प्रतिभागियों को अपने घरेलू स्तर सोयाबीन व मुंगफली से दूध व अन्य उत्पाद तैयार करने की विधि से अवगत कराया। साथ ही प्रतिभागियों को घर पर ही इनके उत्पाद तैयार करने के लिए एक असाइनमेंट भी दिया। उन्होंने कहा कि इनके उत्पाद तैयार करने के लिए घर पर ही मौजूद मिक्सर, ग्राइंडर व अन्य सामान का उपयोग किया जा सकता है।

20 प्रशिक्षणार्थी ले रहे हैं प्रशिक्षण

इस ऑनलाइन प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 20 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मुंगफली व सोयाबीन से विभिन्न उत्पाद तैयार करने की विधियों पर वैज्ञानिक अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाएंगे और इनसे अधिक लाभ कमाने के बारे में जानकारी देंगे। प्रशिक्षण में वैज्ञानिक प्रतिभागियों के साथ प्रशिक्षण संबंधी उनके अनुभवों को लेकर विचार-विमर्श भी करेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	**07.11.2020**	——	--

मुंगफली व सोयाबीन के उत्पाद तैयार कर कमा सकते हैं अधिक मुनाफा : डॉ. अशोक गोदारा

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'सोयाबीन व मुंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसान सोयाबीन व मुंगफली का उत्पादन तो कर लेते हैं लेकिन उनके खाद्य उत्पाद तैयार करने की तकनीकी व सही जानकारी के अभाव में उचित दाम हासिल नहीं कर पाते। इसलिए किसान विश्वविद्यालय से सोयाबीन व मुंगफली के उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण हासिल कर अधिक लाभ कमा सकते हैं। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। डॉ. सुरेंद्र सिंह ने मुंगफली व सोयाबीन की आहार महत्ता के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि सोयाबीन व मुंगफली और इनके उत्पाद संतुलित आहार का अभिन्न अंग हैं। डॉ. डी.के. शर्मा ने इन दोनों को अपने दैनिक आहार में शामिल करने पर जोर दिया। उन्होंने प्रतिभागियों को अपने घरेलू स्तर सोयाबीन व मुंगफली से दूध व अन्य उत्पाद तैयार करने की विधि से अवगत कराया। साथ ही प्रतिभागियों को घर पर ही इनके उत्पाद तैयार करने के लिए एक असाइनमेंट भी दिया। उन्होंने कहा कि इनके उत्पाद तैयार करने के लिए घर पर ही मौजूद मिक्सर, ग्राइंडर व अन्य सामान का उपयोग किया जा सकता है।

'सोयाबीन व मुंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद' विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

20 प्रशिक्षणार्थी ले रहे हैं प्रशिक्षण

इस ऑनलाइन प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 20 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मुंगफली व सोयाबीन से विभिन्न उत्पाद तैयार करने की विधियों पर वैज्ञानिक अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाएंगे और इनसे अधिक लाभ कमाने के बारे में जानकारी देंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	**07.11.2020**	——	--

मुंगफली व सोयाबीन मूल्य संवर्धन उत्पाद पर कार्यशाला आयोजित

प्रशिक्षण शिविर के दौरान प्रतिभागियों से ऑनलाइन रूबरू होते वैज्ञानिक।

हिसार, (सुरेंद्र सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'सोयाबीन व मुंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण)डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसान सोयाबीन व मुंगफली का उत्पादन तो कर लेते हैं लेकिन उनके खाद्य उत्पाद तैयार करने की तकनीकी व सही जानकारी के अभाव में उचित दाम हासिल नहीं कर पाते। इसलिए किसान विश्वविद्यालय से सोयाबीन व मुंगफली के उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण हासिल कर अधिक लाभ कमा सकते हैं। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 20 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मुंगफली व सोयाबीन से विभिन्न उत्पाद तैयार करने की विधियों पर वैज्ञानिक अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाएंगे और इनसे अधिक लाभ कमाने के बारे में जानकारी देंगे। प्रशिक्षण में वैज्ञानिक प्रतिभागियों के साथ प्रशिक्षण संबंधी उनके अनुभवों को लेकर विचार-विमर्श भी करेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**06.11.2020**	——	--

सोयाबीन व मूंगफली के उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण आरंभ

हिसार/06 नवंबर/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'सोयाबीन व मूंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद' विषय पर ऑनलाईन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ जिसका आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा के मार्गदर्शन में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसान सोयाबीन व मूंगफली का उत्पादन तो कर लेते हैं लेकिन उनके खाद्य उत्पाद तैयार करने की तकनीकी व सही जानकारी के अभाव में उचित दाम हासिल नहीं कर पाते। इसलिए किसान विश्वविद्यालय से सोयाबीन व मूंगफली के उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण हासिल कर अधिक लाभ कमा सकते हैं। डॉ. सुरेंद्र सिंह ने कहा कि सोयाबीन व मूंगफली और इनके उत्पाद संतुलित आहार का अभिन्न अंग हैं। डॉ. डीके शर्मा ने इन दोनों को अपने दैनिक आहार में शामिल करने पर जोर दिया। इस ऑनलाईन प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 20 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	**06.11.2020**	——	--

'सोयाबीन व मुंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद' विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'सोयाबीन व मुंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसान सोयाबीन व मुंगफली का उत्पादन तो कर लेते हैं लेकिन उनके खाद्य उत्पाद तैयार करने की तकनीकी व सही जानकारी के अभाव में उचित दाम हासिल नहीं कर पाते। इसलिए किसान विश्वविद्यालय से सोयाबीन व मुंगफली के उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण हासिल कर अधिक लाभ कमा सकते हैं।

डॉ. सुरेंद्र सिंह ने मुंगफली व सोयाबीन की आहार महत्ता के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि सोयाबीन व मुंगफली और इनके उत्पाद संतुलित आहार का अभिन्न अंग हैं। डॉ. डी.के. शर्मा ने इन दोनों को अपने दैनिक आहार में शामिल करने पर जोर दिया। उन्होंने प्रतिभागियों को अपने घरेलू स्तर सोयाबीन व मुंगफली से दूध व अन्य उत्पाद तैयार करने की विधि से अवगत कराया। साथ ही प्रतिभागियों को घर पर ही इनके उत्पाद तैयार करने के लिए एक असाइनमेंट भी दिया। उन्होंने कहा कि इनके उत्पाद तैयार करने के लिए घर पर ही मौजूद मिक्सर, ग्राइंडर व अन्य सामान का उपयोग किया जा सकता है। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 20 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**06.11.2020**	——	--

'सोयाबीन व मुंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद' विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन

मुंगफली व सोयाबीन के उत्पाद तैयार कर कमा सकते हैं अधिक मुनाफा : डॉ. अशोक गोदारा

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'सोयाबीन व मुंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण)डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसान सोयाबीन व मुंगफली का उत्पादन तो कर लेते हैं लेकिन उनके खाद्य उत्पाद तैयार करने की तकनीकी व सही जानकारी के अभाव में उचित दाम हासिल नहीं कर पाते। इसलिए किसान विश्वविद्यालय से सोयाबीन व मुंगफली के उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण हासिल कर अधिक लाभ कमा सकते हैं। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। डॉ. सुरेंद्र सिंह ने मुंगफली व सोयाबीन की आहार महत्ता के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि सोयाबीन व मुंगफली और इनके उत्पाद संतुलित आहार का अभिन्न अंग हैं। डॉ. डी.के. शर्मा ने इन दोनों को अपने दैनिक आहार में शामिल करने पर जोर दिया। उन्होंने प्रतिभागियों को अपने घरेलू स्तर सोयाबीन व मुंगफली से दूध व अन्य उत्पाद तैयार करने की विधि से अवगत कराया। साथ ही प्रतिभागियों को घर पर ही इनके उत्पाद तैयार करने के लिए एक असाइनमेंट भी दिया। उन्होंने कहा कि इनके उत्पाद तैयार करने के लिए घर पर ही मौजूद मिक्सर, ग्राइंडर व अन्य सामान का उपयोग किया जा सकता है।

20 प्रशिक्षणार्थी ले रहे हैं प्रशिक्षण

इस ऑनलाइन प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 20 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मुंगफली व सोयाबीन से विभिन्न उत्पाद तैयार करने की विधियों पर वैज्ञानिक अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाएंगे और इनसे अधिक लाभ कमाने के बारे में जानकारी देंगे। प्रशिक्षण में वैज्ञानिक प्रतिभागियों के साथ प्रशिक्षण संबंधी उनके अनुभवों को लेकर विचार-विमर्श भी करेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समर घोष	**06.11.2020**	——	--

मूंगफली व सोयाबीन के उत्पादों से होता है अधिक मुनाफा: डॉ. गोदारा

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'सोयाबीन व मूंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया गया। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण)डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसान सोयाबीन व मूंगफली का उत्पादन तो कर लेते हैं लेकिन उनके खाद्य उत्पाद तैयार करने की तकनीक व सही जानकारी के अभाव में उचित दाम हासिल नहीं कर पाते। इसलिए किसान विश्वविद्यालय से सोयाबीन व मूंगफली के उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण हासिल कर अधिक लाभ कमा सकते हैं।

उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। डॉ. सुरेंद्र सिंह ने मूंगफली व सोयाबीन की आहार महत्ता के बारे में कहा कि सोयाबीन व मूंगफली और इनके उत्पाद संतुलित आहार का अभिन्न अंग हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	**06.11.2020**	——	--

मुंगफली व सोयाबीन के उत्पाद तैयार कर कमा सकते हैं अधिक मुनाफा : डॉ. अशोक गोदारा

'सोयाबीन व मुंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद' विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 6 नवम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'सोयाबीन व मुंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसान सोयाबीन व मुंगफली का उत्पादन तो कर लेते हैं लेकिन उनके खाद्य उत्पाद तैयार करने की तकनीकी व सही जानकारी के अभाव में उचित दाम हासिल नहीं कर पाते। इसलिए किसान विश्वविद्यालय से सोयाबीन व मुंगफली के उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण हासिल कर अधिक लाभ कमा सकते हैं। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। डॉ. सुरेंद्र सिंह ने मुंगफली व सोयाबीन की आहार महत्ता के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि सोयाबीन व मुंगफली और इनके उत्पाद संतुलित आहार का अभिन्न अंग हैं। डॉ. डी.के. शर्मा ने इन दोनों को अपने दैनिक आहार में शामिल करने पर जोर दिया। उन्होंने प्रतिभागियों को अपने घरेलू स्तर सोयाबीन व मुंगफली से दूध व अन्य उत्पाद तैयार करने की विधि से अवगत कराया। साथ ही प्रतिभागियों को घर पर ही इनके उत्पाद तैयार करने के लिए एक असाइनमेंट भी दिया। उन्होंने कहा कि इनके उत्पाद तैयार करने के लिए घर पर ही मौजूद मिक्सर, ग्राइंडर व अन्य सामान का उपयोग किया जा सकता है।

20 प्रशिक्षणार्थी ले रहे हैं प्रशिक्षण

इस ऑनलाइन प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 20 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मुंगफली व सोयाबीन से विभिन्न उत्पाद तैयार करने की विधियों पर वैज्ञानिक अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाएंगे और इनसे अधिक लाभ कमाने के बारे में जानकारी देंगे। प्रशिक्षण में वैज्ञानिक प्रतिभागियों के साथ प्रशिक्षण संबंधी उनके अनुभवों को लेकर विचार-विमर्श भी करेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उत्तम हिन्दू	**06.11.2020**	——	--

मूंगफली तथा सोयाबीन के उत्पाद तैयार कर कमा सकते हैं अधिक मुनाफा : डॉ. अशोक गोदारा

हिसार/उत्तम हिन्दू न्यूज

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'सोयाबीन व मुंगफली के मूल्य संवर्धन उत्पाद' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसान सोयाबीन व मुंगफली का उत्पादन तो कर लेते है लेकिन उनके खाद्य उत्पाद तैयार करने की तकनीकी व सही जानकारी के अभाव में उचित दाम हासिल नहीं कर पाते। इसलिए किसान विश्वविद्यालय से सोयाबीन व मुंगफली के उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण हासिल कर अधिक लाभ कमा सकते हैं। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया।

डॉ. सुरेंद्र सिंह ने मुंगफली व सोयाबीन की आहार महत्ता के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि सोयाबीन व मुंगफली और इनके उत्पाद संतुलित आहार का अभिन्न अंग हैं। डॉ. डी.के. शर्मा ने इन दोनों को अपने दैनिक आहार में शामिल करने पर जोर दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जीवन आधार	**06.11.2020**	ऑनलाइन	--

Home > हरियाणा > हिसार > इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से किसान अब धान वाले खेत में कर सकेंगे आलू की बिजाई

हिसार

इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से किसान अब धान वाले खेत में कर सकेंगे आलू की बिजाई

SHARE 0

एचएयू वैज्ञानिकों ने धान की पराली प्रबंधन के लिए इन-सीटू तकनीक से निकाला हल

हिसार,

धान की पराल वाले खेत में आलू की बिजाई करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला है, जिसके प्रयोग से अब पराली को बिना जलाए व खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी। इस पराली प्रबंधन तकनीक को हाल ही में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) की वार्षिक बैठकों में स्वीकृति मिल चुकी है। यह बैठकें केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. मनोज कुमार की अध्यक्षता में शिमला में आयोजित हुई थी। इस तकनीक को उन लोगों के लिए सिफारिश किया गया है जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं।

इन वैज्ञानिकों ने किया अनुसंधान

पराली प्रबंधन की इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक पर कृषि महाविद्यालय के कृषि विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. अरुण कुमार सहदेव के नेतृत्व में डॉ. विजय पाल पंघाल, डॉ. लोकेश बोरा व क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उदाणी (करनाल) से डॉ. धर्मवीर यादव के सहयोग से अनुसंधान किया गया। इस तकनीक के लिए बगलोर से एवं तक उदाणी में ट्राइल लगाए गए और उसके बाद सकारात्मक परिणाम आने के बाद किसानों के लिए सिफारिश किया गया।

डॉ. अरुण सहदेव डॉ. विजय पाल पंघाल डॉ. लोकेश बोरा डॉ. धर्मवीर यादव

किसानों को ये आ रही थी मुख्य समस्या

अनुसंधान निदेशक डॉ. एम के. महरोत्रा ने बताया कि पराली की कटाई की समस्या व फसल अवशेषों के चरणबद्ध उपयोग की कमी के कारण आज किसान समस्याओं का सामना कर रहा। उन्होंने बताया कि अक्टूबर माह में ही धान की कटाई होती है और इसी माह में आलू की बिजाई की जाती है। ऐसे में धान के खेत को तुरंत खाली कर किसान उसमें आलू की खेती करते हैं, जिसके लिए उन्हीं खेत को खाली करना पड़ता है। इसी के चलते ऐसी तकनीक विकसित करना जरूरी था जिससे किसानों को इस समस्या से निजात मिल सके।

मानी खोयी भूमि की उर्वरा शक्ति

पराली प्रबंधन की इस इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक को अपनाकर किसान एक ओर जहां फसल विविधिकरण को अपना सकेंगे तो दूसरी ओर भूमि की उर्वरा शक्ति भी कायम रहेगी। फसल अवशेष जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ भूमि व जन-जीवन के स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ते हैं। ऐसे में किसान आलू समेत फसल चक्र अपनाते हुए भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखेंगे और उपयोग भी अगली फसल की बिजाई तक खाली नहीं रखनी पड़ेगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आज समाज	**06.11.2020**	——	--

कृषि विज्ञान केन्द्र तेपला अंबाला में

विशाल किसान मेले का आयोजन

आयोजन

- मेले में अंबाला जिले के 6 ब्लाक साहा, बराड़ा, शहजादपुर, नारायणगढ़, अंबाला-1 एवं 2 के लगड्डाग 610 किसानों एवं महिलाओं ने ड्डाग लिया।

आज समाज नेटवर्क

किसान मेले में मुख्यातिथि का पहुंचने पर बुके देकर स्वागत करते अधिकारी।

अंबाला। कृषि विज्ञान केन्द्र तेपला अंबाला में विशाल किसान मेले का आयोजन फसल अवशेष प्रबन्धन विषय पर किया गया। जिसका शुड्डारम्ड्ड डा.राजबीर सिंह, निदेशक, अटारी-जोन-1, लुधियाना के कर-कमलों से हुआ। इस मेले में अंबाला जिले के 6 ब्लाक साहा, बराड़ा, शहजादपुर, नारायणगढ़, अंबाला-1 एवं 2 के लगड्डाग 610 किसानों एवं महिलाओं ने ड्डाग लिया।

कार्यक्रम में मुख्यातिथि का स्वागत करते हुए डा.उपासना सिंह ने बताया कि तीन वर्षों से इन-सिटू मैनेजमेंट ऑफ क्राप रजड्डू प्रोजक्ट के अर्न्तगत अटारी, जोधपुर एवं लुधियाना के मार्गदर्शन में केविके द्वारा विड्डिन्न फार्म मशीनों का प्रदर्शन, जागरूकता क्रार्यक्रम, किसान मेला, प्रदर्शनी, प्रकाशन, स्कूल व कॉलेज के बच्चों द्वारा रैली, प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष ड्डी कोविड को ध्यान में रखते हुए केन्द्र में किसान मेले का आयोजन किया जा रहा है और विड्डिन्न विड्डागों एवं संस्थाओं द्वारा स्टाल लगाये गये है।

केविके की यही पुकार ना जलाओं पराली इस बार नारे के साथ उन्होंने पराली न जलाने की अपील की। मेले के मुख्य अतिथि डा.राजबीर सिंह, निदेशक, अटारी, जोन-1, लुधियाना ने विड्डिन्न विड्डागों/कम्पनियों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन किया और मेले के आयोजन पर केविके टीम को बधाई दी।

उन्होंने केविके इंचार्ज से किसानों का ड्डमण पंजाब के आलू उत्पादकों के खेतों पर ले जाने का निर्देश दिया। फसल अवशेष प्रबन्धन के नोडल अधिकारी ईंजी.गुरूप्रेम ने हैप्पी सीडर, शर्ब मास्टर, पैडी स्ट्रा चोपर, जीरो टिल ड्रील, एम.बी.प्लोह इत्यादि को प्रदर्शित कर संचालन की जानकारी दी। कृषि अड्डियंत्रण विड्डाग से ईंजी सेठी ने किसानों को मशीनें खरीदने के लिए ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन करवाने के लिए आग्रह किया।

नाबार्ड के जिला विकास प्रबन्धन दीपक जाखड़ ने किसानों को बताया कि 6 ब्लाक में 12 एफ पी ओ बनाएं जा रहे हैं और आलू फसल को मुख्य रूप से जोड़ा गया है। किसान ड्डाई 3 प्रतिशत कम ब्याज पर 2 करोड तक का ऋण लेकर प्रोजेक्ट तैयार कर सकते हैं। राजीव गांधी राजकीय महा विद्यालय, साहा से आए डा.सुखबीर सिंह ने धरती को मां और किसान को उसका बेटा बताते हुए अपनी मातृड्डूमि की रक्षा करने, अवशेष न जलाने एवं अधिकाधिक अन्न उत्पादन करने के बारे में जागृत किया। डा.विक्रम धीरेन्द्र सिंह ने रबी फसलों में उन्नत बीजों का उपयोग, बीजापचार, रोग व कीट प्रबन्धन के बारे में उचित जानकारी दी। वहीं डा.अमित कुमार ने रबी सब्जियों की उन्नत किस्मों व सिफारिशों के बारे में बताया। डा.नवीन सैनी ने फसल अवशेषों से फीड ब्लाक बनाने के बारे में जानकारी दी और स्वरोजगार हेतु डेयरी, बकरी,सूअर, मुर्गी व्यवसाय का अपनाने के लिए अपने विचार रखें । डा.धीरेन्द्र सिंह ने फसलों एवं सब्जियों में रोग व कीट नियंत्रण की जानकारी दी। आने वाले सर्दी के मौसके बारे में किसानों को सजग किया। किसान मेले के अंत में डा.उपासना सिंह ने किसान मेला को सफल बनाने के लिए सड्डी अतिथियों एवं किसान ड्डाईयों एवं महिलाओं का आड्डार व्यक्त किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक जागरण.....

दिनांक 6.11.2020 पृष्ठ संख्या 4 कॉलम 5-7

सामान्य से 7 डिग्री घटा रात का तापमान

जागरण संवाददाता, हिसार : हिसार में वीरवार को रात्रि तापमान सामान्य से सात डिग्री कम रहकर 9.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं अधिकतम तापमान सामान्य से एक डिग्री बढ़कर 32.6 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया है। मौसम विज्ञानियों के अनुसार, इस प्रकार का मौसम एक बार फिर से स्मॉग जैसे हालात बनाएगा। रात के समय सर्दी अधिक पड़ रही है। साथ ही हल्की ओस भी गिरने लगी है। आने वाले दिनों में तापमान में अच्छी खासी गिरावट देखने को मिल सकती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि के मौसम विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. मदन खीचड़ ने बताया कि राज्य में 9 नवंबर तक मौसम परिवर्तनशील रहने की संभावना है। रात्रि तापमान कम होने के कारण बीच-बीच में धुंध या स्मॉग जैसा मौसम बने रहने की संभावना है।

मौसम आधारित कृषि सलाह, किसान करें इसका पालन

- तापमान अनुकूल रहने की संभावना को देखते हुए गेहूं की बिजाई के लिए सिंचित क्षेत्रों में जहां अच्छा पानी उपलब्ध हो तो डब्ल्यूएच 1105, डब्ल्यू एच 1184, एचडी 2967, एचडी 3086 व डब्ल्यूएच 711 किस्मों का प्रयोग करें। यदि कम पानी उपलब्ध हो तो बिजाई के लिए डब्ल्यूएच 1080, डब्ल्यूएच 1142 किस्मों का प्रयोग किया जा सकता है।
- बिजाई से पहले बीज जनित बीमारियों से बचाव के लिए 2 ग्राम वीटावैक्स, बाविस्टिन या थाइरम प्रति किग्रा बीज की दर से सूखा उपचार अवश्य करें।
- देसी चने की बिजाई के लिए खेत को तैयार कर उन्नत किस्मों एचसी 1 (बारानी व सिंचित क्षेत्रों के लिए) तथा सिंचित क्षेत्रों के लिए एचसी 3 (मोटे दाने वाली किस्म) व एचसी 5 किस्मों का प्रयोग कर बिजाई करें।

चने की बिजाई के लिए उपचार

जड़ गलन बीमारी से बचाने के लिए 2.5 ग्राम बाविस्टीन प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित करें। उखेड़ा रोग से बचाव के लिए बिजाई से पूर्व बीज का उपचार जैविक फफूंदीनाशक ट्राईकोडरमा विरिडी (बायोडरमा) 4 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज, विटावैक्स 1 ग्राम प्रति किग्रा बीज की दर से करें।

- आलू के साथ फूल गोभी, बंद गोभी की रोपाई करें।
- मौसम खुश्क रहने की संभावना देखते हुए लगी हुई सब्जियों, फलदार पौधों तथा हरे चारे की फसलों में किसान आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।